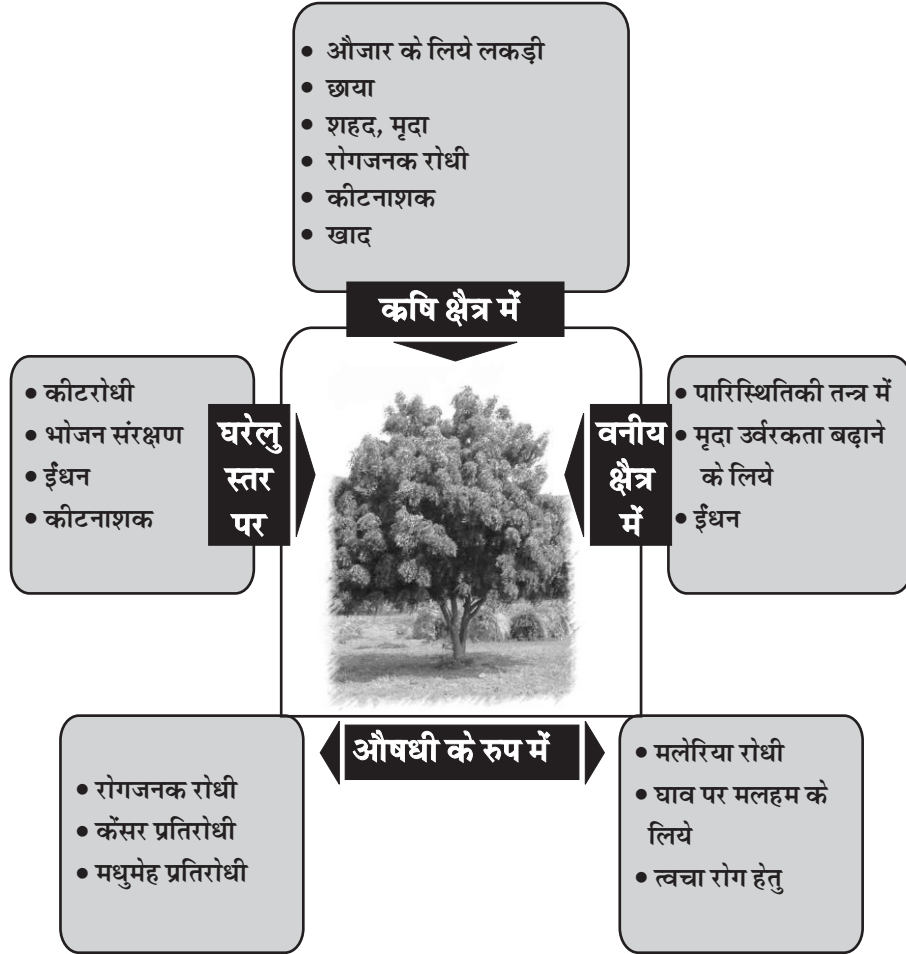


नीम के उपयोग

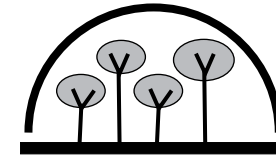


जिस घर में काम आए नीम
उस घर में नहीं जाये हकीम

नीम एक जीवनदाता वृक्ष



वैज्ञानिक नाम
एजाडइरेक्टा इन्डीका



राजस्थान वन उपज संग्राहक एवं प्रशोधक समूह समर्थक समिति

282, पुराना चुंगीनाका, फतेहपुरा, उदयपुर (राज.)

फोन एवं फैक्स : 0294-2451478

email: samarthak@sancharnet.in

परिचय :-

नीम मूल रूप से भारतीय प्रजाति का एक सदाबहार वृक्ष है। एक महत्वपूर्ण औषधीय वृक्ष होने के कारण आज औषधीय जगत में इसकी मांग लगातार बढ़ती जा रही है। भारत में, वैदिक काल से ही नीम एक रहस्यमय वृक्ष के रूप में जाना जाता रहा है अपने औषधीय एवं कीटनाशक गुणों के कारण ही भारतीय संसृति में इसे अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। नीम का वानस्पतिक नाम एजाडिरेक्टा इन्डीका है। इसका सम्बन्ध मोहगनी वृक्ष की प्रजाति से है।

नीम का वृक्ष मध्यम आकार का होता है। इसकी लम्बाई लगभग 12 से 18 मी. तक होती है। तना मोटा व घना है। वृक्ष की छाल छिद्र युक्त, भूरा रंग लिए हुए होती है। पत्तियां संयुक्त, लगभग 20-38 सेमी. लम्बी एवं लहराती हुई होती है। पर्ण टहनियों से जुड़े हुए, 6-7 के समूह में पायी जाती है। पुरानी पत्तियां फरवरी-मार्च में गिर जाती है व अप्रैल-मई (बसन्त) में नयी पत्तियां आती है।

जलवायु :-

नीम शुष्क वनों में प्रा-तिक रूप से उगता है एवं पुरे भारत में सामाजिक वनिकी के रूप में उगाया जाता है। वनीकरण के लिए उष्ण तथा कम वर्षा वाले क्षेत्र नीम की खेती के लिए सर्वाधिक उपयोगी है। नीम की वातावरण, जलवायु व भौगोलिक कारकों के साथ अनुकूलता पाई जाती है। ये शुष्क अर्द्धशुष्क उष्णकटिबंधीय, अर्द्ध उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में 0°.45° तापमान में उग सकते हैं। इन्हें औसतन 450 से 1200 मिमी वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है परन्तु 130 मिमी वार्षिक वर्षा की स्थिति में अनुकूलित होता है। नीम की वृद्धि के लिए काली कपासिय मृदा अत्यन्त उपयोगी होती है।

नीम का प्रसार :-

नीम के पेड़ों में स्वतः स्थापन की अद्भुत क्षमता होती है अतः इसे पनपने में कोई कठिनाई नहीं होती है। इसे लगभग सभी प्रकार की भूमि में उगाया जा सकता है परन्तु बलुई दोमट मिट्टी में बढ़वार अच्छी होती है। सामान्यतः इसे बीजों द्वारा उगाया जाता है परन्तु जड़ या तने की कलम द्वारा भी उगाया जा सकता है। अनुकूल परिस्थितियों में यह तेजी से वृद्धि करता है उगने के पहले दो वर्षों का तना

उपयोग :-

सामान्यत नीम को औषधीय वृक्ष माना जाता है नीम की पत्तियों को उबालकर उससे स्नान करते हैं जिससे घाव अथवा चकता से बचा जा सके। इसके अतिरिक्त त्वचा सम्बन्धी बीमारीयों की रोकथाम के लिये नीम जल का प्रयोग होता है। नीम के बीजों से परिष्त तेल का प्रयोग विभिन्न बीमारीयों की रोकथाम में किया जाता है। जैसे आमाशय अल्सर, गठिया, विम संक्रमण। बीजों की खली को कपास, गन्ना, धान के खेतों में खाद के रूप में प्रयोग किया जाता है। पत्तियों बीजा व छाल के अलावा नीम की लकड़ी भी बहुउपयोगी है। इससे फर्नीचर, कृषक औजार, छोटे औजार, पुल ड्रम बोर्ड इत्यादी निर्मित होते हैं। अतः यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि नीम का प्रत्येक भाग दैनिक जीवन में उपयोगी है। मानव जीवन में इसका उपयोग अनेक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये किया जाता है।



छाल	थकान, कफ, बुखार, भूख कम होने की स्थिति व घावों के लिये, प्यास व चर्म रोगों को भी दूर करती है।
पत्तियां	रक्तशोधक, बुखार में, त्वचा में निखार लाती है, व कीटनाशक के रूप में।
फल	चर्म रोग में, मधुमेह में, रक्तशोधन में
फूल	कफ, पित्त व वात
बीज	विम विकार में

औषधीय उपयोग :-

आय के साधन के रूप में नीम :-

नीम का वृक्ष साधारणः 6-8 वर्ष की अवस्था में फल देना आरम्भ कर देता। 10-12 वर्ष का पेड़ 5-8 किलो व 20 वर्ष का पेड़ 20 से 30 किग्रा बीजों का प्रतिवर्ष उत्पादन करता है। नीम लगभग 100 वर्ष की आयु तक फलता

